प्रेमसागर

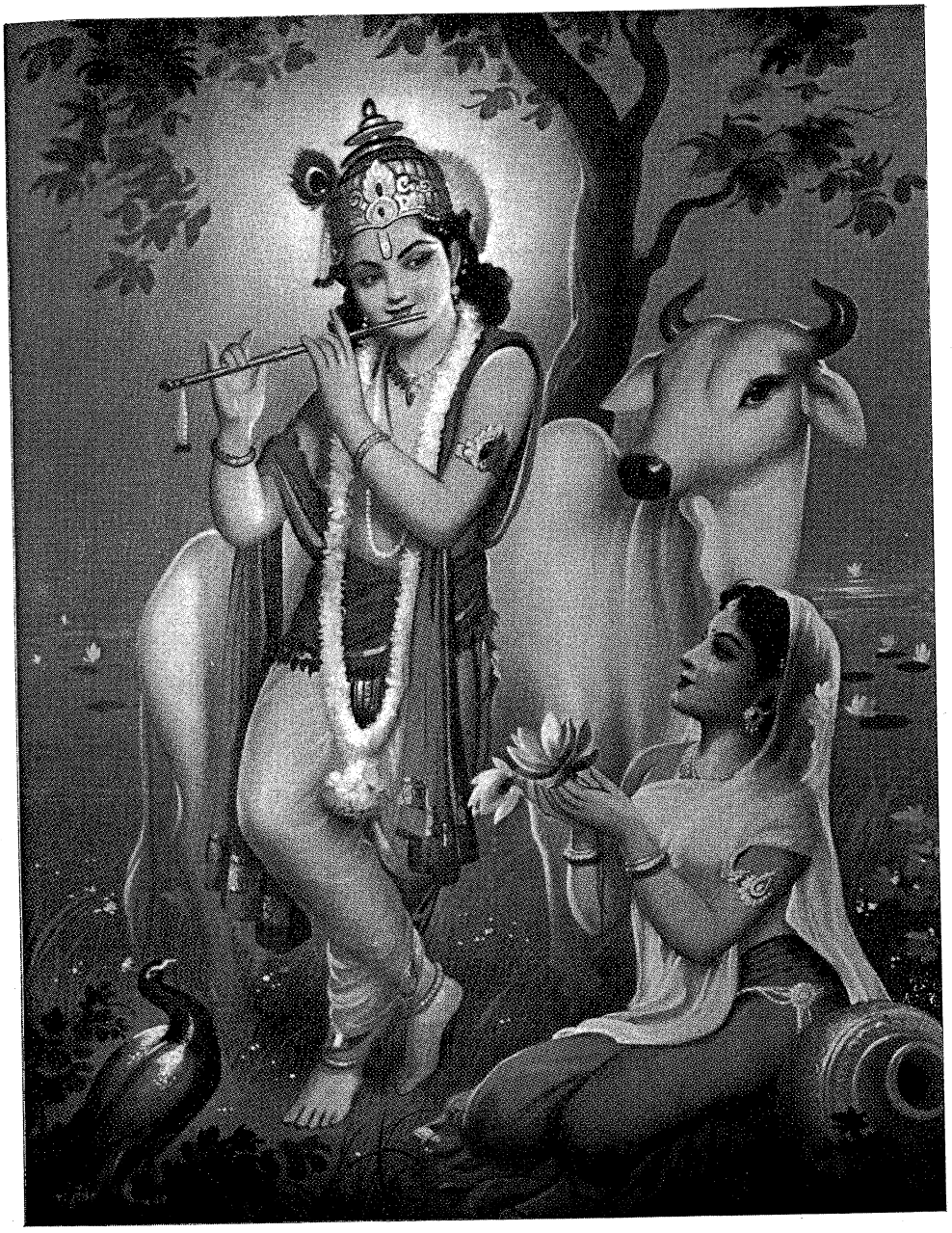

श्री लल्लूलाल कृत

प्रकाशक—तेजकुमार-प्रेस-बुकडिपो, लखनऊ।
उत्तराधिकारी—नवलकिशोर-प्रेस-बुकडिपो, लखनऊ।

१५ वीं बार ५०००] सन् १९६३ मूल्य ६)

सर्वाधिकार सुरक्षित

इसमें इतना क्या गुन है जो दिन भर श्रीकृष्ण के मुँह लगी रहती है, और अधरामृत पी आनंद बरस घन सी गाजती है, क्या हमसे भी यह प्यारी, जो निस दिन लिये रहते हैं बिहारी।

मेरे आगे की यह गढ़ी। अब भई सौत बदन पर चढ़ी॥

जब श्रीकृष्ण इसे पीतांबर से पोंछ बजाते हैं तब सुर, मुनि, किन्नर औ गंधर्व अपनी अपनी स्त्रियों को साथ ले बिमानों पर बैठ बैठ होंसकर सुनने को आते हैं, औ सुनकर मोहित हो जहाँ के तहाँ चित्र से रह जाते हैं। ऐसा इसने क्या तप किया है जो सब इसके आधीन होते हैं। इतनी बात सुन एक गोपी ने उत्तर दिया, कि पहले तो इसने बाँस के बंस में उपज हरि का सुमिरन किया, पीछे घाम, सीत, जल ऊपर लिया, निदान टूक टूक हो देह जलाय धुआँ पिया।

इससे तप करते हैं कैसा। सिद्ध हुई पाया फल ऐसा।

यह सुन कोई ब्रजनारी बोली कि हमको बेनु क्यों न रची, ब्रजनाथ, जो निस दिन हरि के रहतीं साथ। इतनी कथा सुनाय श्रीशुकदेवजी राजा परीक्षित से कहने लगे कि महाराज, जब तक श्रीकृष्ण धेनु चराय बन से न आवें, तबतक नित गोपी हरि के गुन गावें।

तेईसवाँ अध्याय

चीरहरण

श्रीशुकदेव मुनि बोले कि सरद ऋतु के जाते ही हेमंत ऋतु आई औ अति जाड़ा, पाला पड़ने लगा। तिस काल ब्रजबाला आपस में कहने लगीं कि सुनो सहेली, अगहन के न्हाने से जन्म जन्म के पातक जाते हैं और मन की आस पूजती हैं, यों हमने प्राचीन लोगों के मुख से सुना है। यह बात सुन सबके मन में आई कि अगहन न्हाइये तो निस्संदेह श्रीकृष्ण बर पाइये।

ऐसे बिचार भोर होते ही उठ बस्त्र आभूषण पहर सब ब्रजबाला मिल जमुना न्हान आईं, स्नान कर सूरज को अरघ दे, जल से बाहर आय, माटी की गौर बनाय, चंदन, अक्षत, फूल, फल चढ़ाय, धूप दीप नैवेद्य

आगे धर, पूजा कर, हाथ जोड़, सिर नाय, गौर को मनाय के बोलीं--हे देवी, हम तुमसे बार बार यही बर माँगती हैं कि श्रीकृष्ण हमारे पति होयँ। इस बिधि से गोपी नित न्हावें, दिन भर ब्रत कर साँझ को दही भात खा भूमि पर सोवें, इसलिए कि हमारे ब्रत का फल शीघ्र मिले।

एक दिन सब ब्रजबाला मिल स्नान को औघट घाट गईं औ वहाँ जाय चीर उतार तीर पर धर नग्न हो नीर में पैठ लगीं हरि के गुन गाय गाय जल क्रीड़ा करने। तिसी समै श्रीकृष्ण भी बंशीबट की छाँह में बैठे धेनु चरावते थे। देवी इनके गाने का शब्द सुन वे भी चुपचाप चले आये और लगे छिपकर देखने। निदान देखते देखते जो कुछ उनके जी में आई, तो सब बस्त्र चुराय कदम पर जा चढ़े औ गठड़ी बाँध आगे धर ली। इतने में गोपी जो देखें तो तीर पै चीर नहीं, तब घबराकर चारों ओर उठ उठ लगीं देखने औ आपस में कहने कि अभी तो यहाँ एक चिड़िया भी नहीं आई, बसन कौन हर ले गया माई। इस बीच एक गोपी ने देखा कि सिर पर मुकुट, हाथ में लकुट, केसर तिलक दिये, बन-माल हिये, पीतांबर पहरे, कपड़ों की गठड़ी बाँधे, मौन साधे, श्रीकृष्ण कदंब पै चढ़े छिपे हुए बैठे हैं। वह देखते ही पुकारी--सखी, वे देखो हमारे चितचोर चीरचोर कदंब पर पोट लिए बिराजते हैं। यह बचन सुन और सब युवती कृष्ण को देख लजाय, पानी में पैठ, हाथ जोड़ सिर नाय बिनती कर, हा हा खाय बोलीं--

दीनदयाल, हरन दुख प्यारे। दीजे मोहन चीर हमारे॥
ऐसे सुनके कहें कन्हाई। यों नहिं दूँगा नंद दोहाई॥
एकएक कर बाहर आओ। तो तुम अपने कपड़े पाओ॥

ब्रजबाला रिसाय के बोलीं--यह तुम भली सीख सीखे हो जो हमसे कहते हो नंगी बाहर आओ, अभी अपने पिता बंधु से जाय कहें तो वे तुम्हें चोर चोर कर आय गहें, औ नंद जसोदा को जा सुनावें, तो वे भी तुमको सीख भली भाँति से सिखावें। हम करती हैं किसी की कान, तुमने मेटी सब पहचान।

इतनी बात के सुनते ही क्रोध कर श्रीकृष्णजी ने कहा कि अब चीर

तधी पाओगी जब विनको लिवा लावोगी, नहीं तो नहीं। यह सुन डरकर गोपी बोलीं, दीनदयाल हमारी सुध के लिवैया, पति के रखैया तो आप हैं, हम किसे लावेंगी। तुम्हारे ही हेतु नेम कर मगसिर मास न्हाती हैं। कृष्ण बोले--जो तुम मन लगाय मेरे लिये अगहन न्हाती हो तो लाज औ कपट तज आय अपने चीर लो। जद श्रीकृष्णचंद ने ऐसे कहा तद सब गोपी आपस में सोच बिचार कर कहने लगीं कि चलो सखी, जो मोहन कहते हैं सोई मानें, क्योंकि ये हमारे तन मन की सब जानते हैं, इनसे लाज क्या। यों आपस में ठान श्रीकृष्ण की बात मान, हाथ से कुच देह दुराय सब युवती नीर से निकल, सिर नौढ़ाय जब सन-मुख तीर पर जा खड़ी हुईं, तब श्रीकृष्ण हँसके बोले कि अब तुम हाथ जोड़ जोड़ आगे आओ तो मैं बस्त्र दूँ; गोपी बोलीं--

काहे कपट करत नँदलाल। हम सूधी भोरी ब्रजबाल॥
परी ठगोरी सुधि बुधि गई। ऐसी तुम हरि लीला ठई॥
मन सँभारि के करिहैं लाज। अब तुम कछू करो ब्रजराज॥

गोपियों को नग्न स्नान न करने का श्रीकृष्ण का उपदेश करना

इतनी बात कह जद गोपियों ने हाथ जोड़े तो श्रीकृष्णचंदजी ने बस्त्र दे उनके पास आय कहा कि तुम अपने मन में कुछ इस बात का

बिलग मत मानो, यह मैंने तुम्हें सीख दी है, क्योंकि जल में बरुन देवता का बास है, इससे जो कोई नग्न हो जल में न्हाता है विसका सब धर्म बह जाता है। तुम्हारे मन की लगन देख मगन हो मैंने यह भेद तुमसे कहा। अब अपने घर जाओ, फिर कातिक महीने में आय मेरे साथ रास कीजियो।

श्रीशुकदेव मुनि बोले कि महाराज, इतना बचन सुन प्रसन्न हो संतोष कर गोपी तो अपने घरों को गईं औ श्रीकृष्ण बंसीबट में आय गोप, गाय, ग्वाल, बाल सखाओं को संग ले आगे चले। तिस समै चारों ओर सघन बन देख देख बृक्षों की बड़ाई करने लगे कि देखो ये संसार में आ अपने पर कितना दुख सह लोगों को सुख देते हैं। जगत में ऐसे ही परकाजियों का आना सुफल है। यों कह आगे बढ़ जमना के निकट जा पहुँचे।

चौबीसवाँ अध्याय।

श्रीकृष्ण का द्विजपत्नियों से भोजन मँगवाना

श्रीशुकदेवजी बोले कि जब श्रीकृष्ण जमना के पास पहुँच रूख तले लाठी टेक खड़े हुए, तब सब ग्वाल बाल औ सखाओं ने आय कर जोड़ कहा कि महाराज, हमें इस समय बड़ी भूख लगी है, जो कुछ छाक लाये थे सो खाई पर भूख न गई। कृष्ण बोले--देखो वह जो धुआँ दिखाई देता है तहां मथुरिये कंस के डर से छिपके यज्ञ करते हैं, उनके पास जा हमारा नाम ले दंडवत कर हाथ बाँध खड़े हो, दूर से भोजन ऐसे दीन हो माँगियो, जैसे भिखारी अधीन हो माँगता है।

यह बात सुन ग्वाल चले चले वहाँ गये जहाँ माथुर बैठे यज्ञ कर रहे थे। जाते ही उन्होंने प्रनामकर निपट आधीनता से कर जोड़ के कहा—महाराज, आपको दंडवत कर हमारे हाथ श्रीकृष्णचंदजी ने यह कहला भेजा है कि हमको अति भूख लगी है, कुछ कृपा कर भोजन भेज दीजे। इतनी बात ग्वालों के मुख से सुन मथुरिये क्रोधकर बोले—तुम तो बड़े